Volume-3, No. II, Aug-2016, pp. 79-80

वैदेहीचरित महाकाव्य में ऋतु वर्णन

श्री गंगा सिंह, शोधार्थी, संस्कृत विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

सार

उस वन्य भूमि में प्रसन्न रहने वाले उनके साक्षात सुखों को देखकर ऋतुराज बसन्त मानों परमानन्द को प्राप्त करने की इच्छा से अति वेग से वहाँ उपस्थित हुआ।[1] जो वन शिशिर ऋतु क्रूर राजा से नगर की तरह दुखी था, वही बसन्तकाल के आने पर फूलों के साथ हंसने लगा जैसे सुन्दर नीति वाले राजा के आने पर नगर के लोग सुखी हो जाते है।[2] ताल के साथ भ्रमर समुदाय को गायन करने पर लता रूपी अबला (नारी) सुसज्जित होने से रमणीय रूप वाली होकर नवीन पुष्प रूप आवरण को वहन करती हुई बासन्तिक हवा के साथ नाचने लगी।[3]

मुख्य शब्दः बसन्त वर्णन, वर्षा ऋतु, हेमन्त ऋतु

बसन्त वर्णन

बसन्तकाल में उन्नत फूलों के भार से झुकी हुई कोई वृक्ष की शाखा धारण किये हुए अनेक आभूषणों से झुकी हुई देह वाली नारी की तरह सुशोभित हो रही थी।[4] सुखपूर्वक उपभोग (रति) में समर्थ वारि रूप देहवाली, ना अत्यन्त मोटी और ना अत्यन्त दुबली पतली अंग वाली, एक दूसरे के संग में रहने वाले चक्रवाक ही जिसके स्तन हैं, मीन (मछली) ही जिसकी आंखें हैं। ऐसी नदी स्त्री के समान सुशोभित होने लगी। ''बसन्त ऋतु में नदी के अन्तर्गत न तो ज्यादा पानी होता है अैर न समाप्त, अतः वारिरूप देह वाली नदी को मध्यम शरीर वाली कहा गया है।''[5]

वासन्तिक पवन के साथ वन प्रदेश रूप पति के शुभघर में आई हुई लता रूपी स्त्री पुनः उसे (बसन्त हवा) लौटने की इच्छा करने पर भूमि शैया बन गयी। बसन्त काल में जो लता वन प्रदेश में लहरा रही थी, वासन्तिक हवा के लौटने पर लताऐं पृथ्वी पर गिर पड़ीं।[6] रमण की इच्छा से नजदीक आये सजातीय पुरूष (हरिण) के सींग द्वारा खुजलाने के बहाने से शिथिल हो रहे अंगों के संग को हरिणी स्थिर होकर सहन कर रही थीं।[7]

बसन्त ऋतु में चलने वाली समशीतोष्ण हवा रूप आसव को पीने से उत्पन्न उन्माद द्वारा सौन्दर्य को वशीकृत करने वाली लतायें, जो पुष्प गुच्छ रूप स्तनों एवं नवपल्लव रूप वस्त्रों को धारण कर रही थी, आदरभाव से वृक्षों का आलिंगन करने लगी।[8]

नदी के तट प्रदेश में कमलिनी कुंज में छिपी हुई हंसिनी के पास पुरूष हंस को अपनी आवाज लगाने पर निकट स्थित भवन से बाहर निकलती हुई एक विवाहित स्त्री जो एक नई हंसिनी की तरह थी, अत्यन्त लज्जित हो गयी।[9] पुराने पत्रों के हट जाने से लज्जा के भार से झुकी हुई की तरह अपनी लता को बसन्त ऋतु ने नूतन वस्त्रों की तरह सैकड़ों पल्लवों से अत्यन्त रमणीय रूपा बना दिया।[10] जो पृथ्वी अनावृत थी, वह जाड़े के समय में गरीब महिला की तरह देर तक नींद प्राप्त नहीं करती थी और वह पृथ्वी जो पुराने पत्तों से सम्पूर्ण अंगों को ढ़क रही थी उसे लोगों ने सुख में सोयी हुई की तरह माना।[11] अपनी आवास भूमि की लताओं से और सुन्दर फूलों से सजाती हुई सीता वन को नया बनाने के लिए उद्यत हो रही बसन्त लक्ष्मी की तरह शोभा धारण कर रही थी।[12]

वर्षा ऋतु वर्णन

किष्किन्धा पर्वत से जिसका दक्षिण भाग सटा हुआ था, ऐसी वनस्थल में प्रवेश करने के इच्छुक श्रीराम के अंगों को, जो सीता वियोग से तप्त हो रहे थे, शान्त करने की इच्छा से ही आकाश में मेघ उठने लगा।[13] वियोगी श्रीराम को आकाश में स्पष्ट रूप में अपनी पत्नी की दर्शनानुभूति हुआ करती थी, अर्थात उस वर्षा काल में तारों को विलुप्त हो जाने से आभूषणविहीन, सन्ताप से उत्पन्न कालिमा से युक्त एवं बरसते जल से अश्रु प्रवाहित करती हुई की तरह आकाशीय शोभा अपनी पत्नी की याद कराने लगी।[14] समृद्धि को प्राप्त करने वाली कुत्सित कुलांगना की तरह मेघकाल के आगमन होने पर नदी समृद्ध जला होकर दुरन्त वेग से बहने लगी, उस समय वह कुमार्गता एवं लोगों के मार्ग को दूषित करने वाली भी हो गयी। अर्थात कुकुलंगनाऐं जब सम्पत्ति प्राप्त करती हैं, तब मर्यादाओं का उल्लंघन करती हुई एवं लौकिक आचार को कलंकित करती हुई, उद्धत गति से चलने लगती हैं। वर्षाकाल में नदियों की भी यही स्थिति हो गयी।[15] जो लता आतपकाल में विरही नारी की तरह शुष्क होकर पुष्परूप आभूषण से हीन हो गयी थी तथा माता सदृश पृथ्वी अपनी गोद में रखकर जिसका पालन–पोषण कर रही थी।[16] वही लता (जो पहले शुष्क रूप में थी) इस समय मेघ रूप प्रिय के आ जाने पर, तथा उसके द्वारा स्नेह रूप जल से अभिसिंचित किये जाने पर, परिस्फुटित एवं

नूतन व वस्त्रदृश पत्रों से सुसज्जित होकर आँखों में खुशी का अंकुर उत्पन्न करने लगी।[17]

गर्मी ऋतु के द्वारा जो ताप (ऊष्मा) भी तरितप्त होता हुआ पर्वतों की पृष्ठभूमि में प्रविष्ट हो गया था, आज वही ताप मेघों के पानी में स्नान करने की इच्छा से वाष्प रूप में बाहर निकलने लगा।[18] मेघ के आने पर सद्यःस्नाता पृथ्वी वनस्पतियों के रूप में हरी क्रांति वाले वस्त्र को धारण करती हुई एवं जल द्वारा खात (गड्ढा) को पूर्ण होने से भरी हुई आंचल वाली होकर कुलीन ललना (नायिका) की तरह सुशोभित हो रही थी।[19] सम्पूर्ण पृथ्वी से दूर किये आ रहे तापों से जुड़कर जलते हुए की तरह (श्रीराम) सहायक को खोजने के लिए इधर–उधर चलते हुए; प्रिया वियोग के कारण खिन्न–प्राण की तरह लग रहे थे।[20]

हेमन्त ऋतु वर्णन

शरद ऋतु बीत जाने पर हेमन्त काल का आविर्भाव हुआ, जैसे नीति के समाप्त हो जाने पर अन्तहीन कष्ट उत्पन्न होता है। पृथ्वी मानों दुबली हो गयी, जाड़े का अत्यन्त विस्तार हो गया, जैसे लोक में दृष्ट राजा के अधीन सारा अधिकार चला जाने पर पृथ्वी झुलसी हुई (क्षाम) हो जाती है।[21]

कमल समुदाय कान्तिहीन हो गया। तालाब दर्शकों के चित्त के लिए रमणीय नहीं रहे, जैसे दुर्भाग्य वशात धनविहीन घर, गृहस्थों के मन को अच्छे नहीं लगते। इससे पूर्व जो खेत फसलों से अत्यन्त सुशोभित हो रहे थे, अब वे ही फसलविहीन होकर आंखों को रूचिकर दिखाई नहीं दे रहे थे।[22]

इस समय लोगों का समुदाय स्पष्टतः यही स्वीकार करने लगा है कि सूर्य की किरणों एवं अग्नि की सेवा से ही इस जीवन का कष्ट दूर किया जा सकता है। जाड़े से उत्पन्न कष्ट एक मात्र रूई से ही जीतने योग्य है। सामान्य रूप से सभी लोगों की ऐसी ही अकाट्य मान्यता हो गयी है।[23] लोग शाम एवं सुबह नियमपूर्वक हवन करने की तरह आग को प्रज्वलित करके उसके प्रकाश से घर को सुखी बनाते हैं। ठंडक के प्रभाव से रात के पहर बड़े मालूम पड़ने लगे हैं एवं गरीब लोगों का समूह समय को असहाय अनुभव करने लगा है।[24] पृथ्वी पर उगी हुई घासों की गति (वृद्धि) भी मन्द पड़ गयी है, जैसे सज्जनों के घर में भी ऋण का मिलना बन्द हो गया हो। नदियों की क्षीण धाराऐं उन दीन–दुखी जनता का अनुकरण करने लगी है, जो पोषाहार प्राप्त न होने के कारण दुबली हो गयी है।[25]

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. वैदेहीचरितम् मकाकाव्यम् –5/74
2. वही –5/75
3. वही – 5/76
4. वही – 5/77
5. वही – 5/78
6. वही – 5/79
7. वही – 5/80
8. वही – 5/81
9. वही – 5/82
10. वही – 5/83
11. वही – 5/84
12. वही – 5/85
13. वही – 6/23
14. वही – 6/24
15. वही – 6/25
16. वही – 6/26
17. वही – 6/27
18. वही – 6/28
19. वही – 6/29
20. वही – 6/30
21. वही – 3/1
22. वही – 3/2
23. वही – 3/3
24. वही – 3/4
25. वही – 3/5